शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

महिलाओं का शिक्षा के द्वारा सशक्तिकरण

शैलेन्द्र सिंह
असि० प्रोफेसर, समाज कार्य विभाग एवं सह समन्वयक महिला अध्ययन केन्द्र, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी, उ०प्र०

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

महिलाओं का शिक्षा के द्वारा सशक्तिकरण

- शैलेन्द्र सिंह*

विषय संकेतः- महिलाओं की शिक्षा, शिक्षा द्वारा सशक्तिकरण

समाज सामाजिक सम्बन्धों का जाल है। जिसका आधार परस्पर निर्भरता मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति एवं नर-नारी का सम्मिलन है। महिलाओं की परिवार में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष दोनों प्रकार से भागीदारी सुनिश्चित रहती है। उनके द्वारा घर एवं बाहर के कार्यों को बड़ी सहजता एवं सफलता के साथ निर्वहन किया जाता है। इसके बावजूद महिलाओं को समाज के ठेकेदारों ने विभिन्न प्रकार की सुविधाओं एवं अधिकारों से वंचित कर रखा है। वे घर के समस्त कार्यों को तो करती है, लेकिन चल-अचल सम्पत्ति से वंचित हैं, उन्हें मुखाग्नि का अधिकार नहीं है। कृषि के लगभग समस्त कार्यों को करतीं हैं, किन्तु किसान नहीं कहलाती हैं। दुनिया की आधी-आबादी यदि शोषित रहेगी तो समाज का विकास संभव नहीं होगा। इसलिये शिक्षा ही एक ऐसा सशक्त माध्यम है, जो चँहुमुखी विकास करती है। प्रस्तुत शोध पत्र में ग्राम पन्हर (जो कि उ0प्र0 राज्य के औरैया जिले में स्थित है) की 200 निरक्षर महिलाओं पर एक वर्ष तक क्रियात्मक शोध किया गया है। जिसका परिणाम यह आया, कि उस ग्राम पंचायत की महिलाओं में जागरूकता का स्तर बढ़ गया एवं उनमें रोजगार सृजन क्षमता बढ़ी पायी गई।,

समस्या का कथनः

प्रस्तुत अध्ययन ग्रामीण निरक्षर महिलाओं पर आधारित है। दुनिया की आधी आबादी महिलाओं की है। इसके बाद भी महिलाओं का दुनिया में सबसे ज्यादा शोषण होता है। वह शोषण का चाहे जो रूप-यौन शोषण, दैहिक शोषण, आर्थिक शोषण, व्यवसायिक शोषण आदि हो, हर जगह महिलाएँ ही शोषण का केन्द्र बिन्दु होती हैं। महिलाएँ परिवार की आधारशिला हैं सम्पूर्ण परिवार की धुरी महिलाएँ हैं। बच्चां के लालन-पालन से लेकर पति की शारीरिक, मानसिक, आर्थिक अथवा सम्पूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति माँ/पत्नी द्वारा ही की जाती है। ऐसे में यदि महिला सक्षम नहीं है, तो उस परिवार का विकास कैसे हो सकता है। इस तरह महिलाओं का जीवन के समस्त क्षेत्रों में महत्व होने के बावजूद भी उन्हें महत्वहीन समझा जाता है एवं उनकी उपेक्षा की जाती है। यही कारण है कि महिलाओं की पुरुषों की अपेक्षा साक्षरता अनुपात कम है। उपरोक्त कथनों के आधार पर सिद्ध होता है, कि जब साक्षर महिलाएँ शोषण की शिकार हैं तो निरक्षर महिलाओं की क्या दशा होगी? सबसे ज्यादा समस्याग्रस्त ग्रामीण निरक्षर महिलाएँ हैं, क्योंकि वे निरक्षर तो है ही साथ ही वे ग्रामवासी हैं। जहाँ रोजगार के संसाधनों की अनुपलब्धता पायी जाती है। इस कारण ग्रामीण महिलाएँ रोजगार से वंचित रह जाती हैं।

ग्रामीण परिवेश की महिलाओं की सबस बड़ी समस्या निरक्षरता की है, वे अक्षरज्ञान से वंचित हैं। इस कारण उन्हें अपने अधिकारों की जानकारी नहीं है। उन्हें रोजगार के संसाधनों की जानकारी नहीं है। वे पढ़-लिख नहीं सकती, इसलिए विभिन्न प्रकार की सरकारी एवं गैरसरकारी योजनाओं से वंचित रह जाती हैं। जिसके कारण उनके विकास में बाधा उत्पन्न होती है।

इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन की समस्या ग्रामीण महिलाओं में निरक्षरता है। इस कारण वे स्वयं को अशक्त महसूस करती है। इन महिलाओं को साक्षरता के माध्यम से सशक्त बनाया जा सकता है। प्रस्तुत अध्ययन में 15 से 35 आयुवर्ग की ग्रामीण महिलाओं को साक्षरता के माध्यम से सशक्त करने का प्रत्यन किया गया है। समस्या का कथन निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम में स्पष्ट किया जा सकता है।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

महिलाओं का शिक्षा के द्वारा सशक्तिकरण

शैलेन्द्र सिंह
असि० प्रोफेसर, समाज कार्य विभाग एवं सह समन्वयक महिला अध्ययन केन्द्र, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी, उ०प्र०

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

अध्ययन के उद्देश्य:

प्रस्तुत क्रियात्मक शोध अध्ययन का सामान्य उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं को शिक्षित कर रोजगार परक कायां में प्रशिक्षण प्रदान करना है, जिससे कि उनकी स्थिति को सुदृढ़ किया जा सके एवं उन माध्यमों का पता लगाना जिससे समाज की सम्पूर्ण महिलाओं को सशक्त बनाया जा सके।

अध्ययन का विषय क्षेत्र :

प्रस्तुत अध्ययन का विषय क्रियात्मक शोध द्वारा 15 से 35 आयु वर्ग की ग्रामीण महिलाओं का साक्षरता के माध्यम से सशक्तीकरण करना है। साक्षरता ही वह माध्यम है, जिसके माध्यम से महिलायें अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकता है। निरक्षर महिलाओं को जीवन में विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है एवं अनेक प्रकार के शोषण से गुजरना पड़ता है।

अध्ययन का क्षेत्र:

प्रस्तुत शोध का अध्ययन क्षेत्र उत्तर प्रदेश के औरैया जिले की ग्राम पंचायत

अध्ययन की प्रकृति (Nature of Study):

प्रस्तुत शोध की प्रकृति क्रियात्मक थी। जिससे गांव की निरक्षर महिलाओं की विभिन्न समस्याओं की जानकारी कर उनमें समाधान के प्रयास के साथ-साथ उनकी शिक्षा तथा रोजपरक कार्यों में प्रशिक्षण की व्यवस्था शोधकर्ता द्वारा विभिन्न साक्षरता कार्यक्रमों के माध्यम से की गई।

उपरोक्त क्षेत्र का चुनाव इस कारण से किया गया, क्योंकि प्रशिक्षण एवं शिक्षा के क्षेत्र में इन गांवों की महिलाओं में कला संस्कृति आदि की विविधताएँ है। उपरोक्त अध्ययन क्षेत्र में एक गांव बंजारों का हैं, तो दूसरा मल्लाहों का, इसके अलावा ग्राम पन्हर में चमार, लोधी (राजपूत) ब्राह्मण, कोरी, कुम्हार, धोबी, खंगार, कहार, भाट, मल्लाह, मुसलमान, बाल्मीकि, भुर्जी (भड़भूजा), धानुक, गुप्ता, तेली बढ़ई, यादव निवास करतीं हैं।

आँकड़ों के स्रोत:

प्रस्तुत अध्ययन क्रियात्मक अनुसंधान है। इसलिए इसमें ज्यादातर तथ्य प्राथमिक हैं। सैद्धान्तिक अध्यायों के लिए द्वितीयक स्रोत से जानकारी ली गयी है। प्राथमिक तथ्यों के संकलन में साक्षात्कार अनुसूची तथा द्वितीयक तथ्यों के संकलन में पुस्तकों, पत्रिकाओं, रिसर्च जर्नल, रिर्पोटों आदि का सहारा लिया गया है।

आँकड़ों का विवरण:

१. उत्तरदाताओं में शिक्षा के महत्व सम्बन्धी विवरण :

क्र. सं.	शिक्षा का महत्व सम्बन्धी विवरण	उत्तरदाताओं की संख्या		प्रतिशत (%)	
		पूर्व अ०	पश्चात अ०	पूर्व अ०	पश्चात अ०
अ.	हा	166	175	83	87.50
ब.	नहीं	34	25	17	12.50
	योग	200	200	100	100

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

महिलाओं का शिक्षा के द्वारा सशक्तिकरण

शैलेन्द्र सिंह
असि० प्रोफेसर, समाज कार्य विभाग एवं सह समन्वयक महिला अध्ययन केन्द्र, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी, उ०प्र०

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

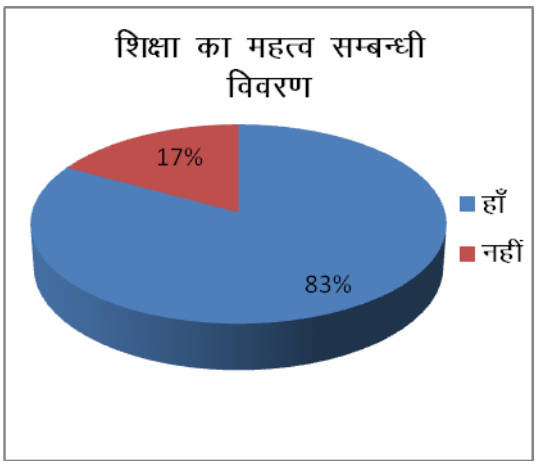

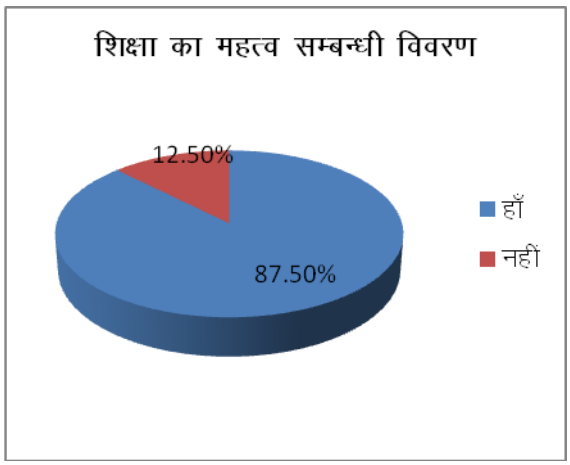

२. उत्तरदाताओं में प्राथमिक शिक्षा विषय की जानकारी सम्बन्धी विवरण:

क्र. सं.	शिक्षा का महत्व सम्बन्धो विवरण	उत्तरदाताओं की संख्या		प्रतिशत (%)	
		पूर्व अ०	पश्चात अ०	पूर्व अ०	पश्चात अ०
अ.	हा	69	112	34.50	56
ब.	नहीं	131	88	65.50	44
	योग	200	200	100	100

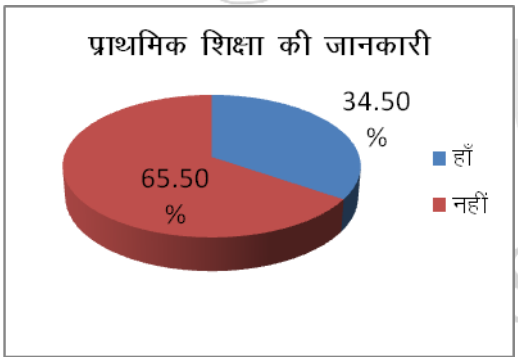

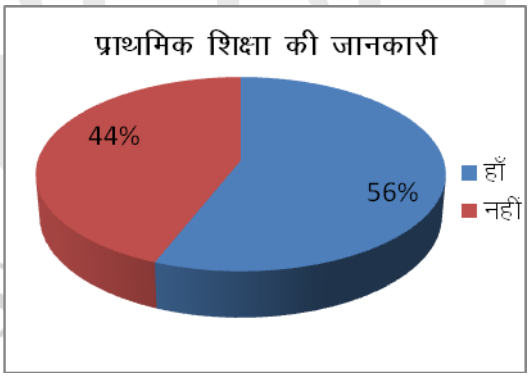

३. उत्तरदाताओं में शिक्षा से सम्बन्धित योजनाओं की जागरुकता सम्बन्धी विवरण:

क्र.सं.	शिक्षा का महत्व सम्बन्धो विवरण	उत्तरदाताओं की संख्या		प्रतिशत (%)	
		पूर्व अ०	पश्चात अ०	पूर्व अ०	पश्चात अ०
अ.	हा	13	65	6.50	32.50
ब.	नहीं	187	135	93.50	67.50
	योग	200	200	100	100

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

शैलेन्द्र सिंह
असि० प्रोफेसर, समाज कार्य विभाग एवं सह समन्वयक महिला अध्ययन केन्द्र, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी, उ०प्र०

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

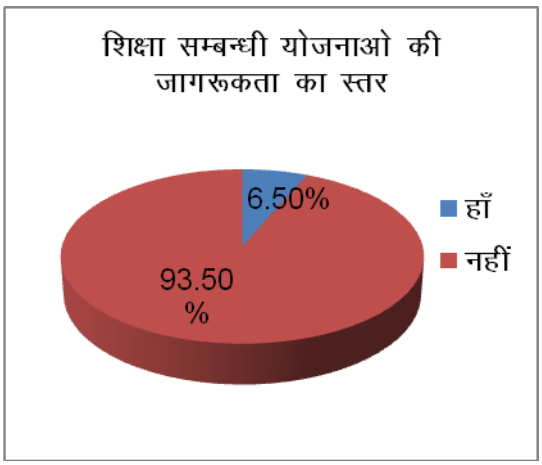

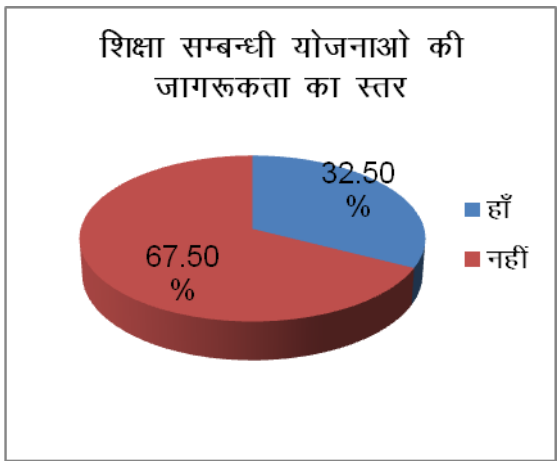

४. उत्तरदाताओं में साक्षरता अभियान जागरूकता सम्बन्धी विवरण :

क्र. सं.	शिक्षा का महत्व सम्बन्धी विवरण	उत्तरदाताओं की संख्या		प्रतिशत (%)	
		पूर्व अ०	पश्चात अ०	पूर्व अ०	पश्चात अ०
अ.	हा	55	115	27.50	57.50
ब.	नहीं	145	85	72.50	42.50
	योग	200	200	100	100

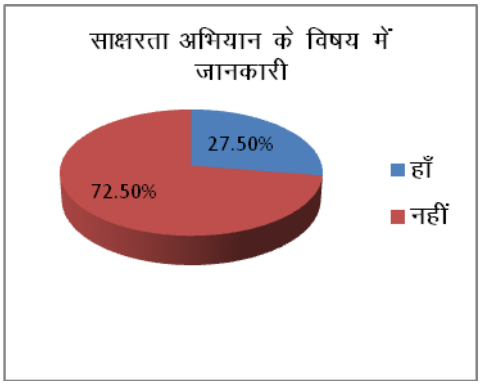

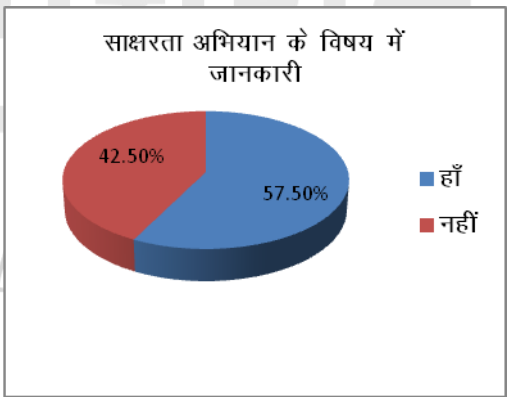

५. उत्तरदाताओं में प्रौढ़ शिक्षा जागरूकता सम्बन्धी विवरण

क्र. सं.	शिक्षा का महत्व सम्बन्धी विवरण	उत्तरदाताओं की संख्या		प्रतिशत (%)	
		पूर्व अ०	पश्चात अ०	पूर्व अ०	पश्चात अ०
अ.	हा	79	115	39.50	57.50
ब.	नहीं	121	85	60.50	42.50
	योग	200	200	100	100

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

महिलाओं का शिक्षा के द्वारा सशक्तिकरण

शैलेन्द्र सिंह
असि० प्रोफेसर, समाज कार्य विभाग एवं सह समन्वयक महिला अध्ययन केन्द्र, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी, उ०प्र०

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

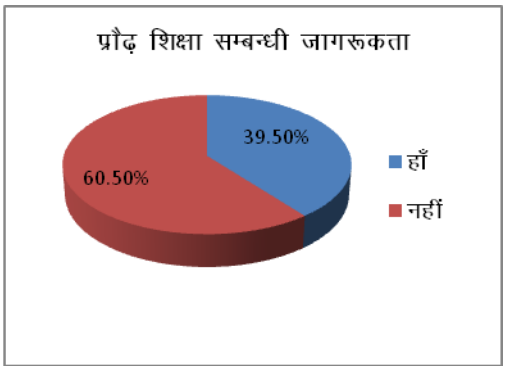

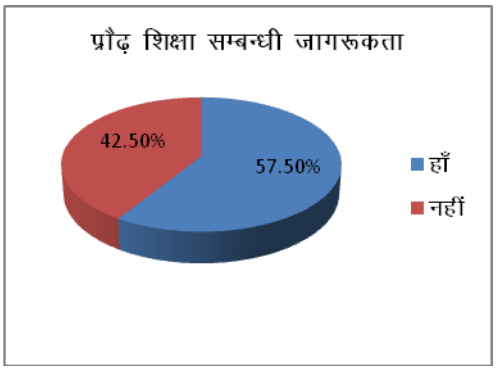

परिणाम

१. उत्तरदाताओं में शिक्षा के महत्व सम्बन्धी विवरण:

तालिका संख्या-1 से स्पष्ट होता है, कि पहले (83 प्रतिशत) उत्तरदाता शिक्षा के महत्व को समझते थे, किन्तु जब शोधर्थी ने उन्हें शिक्षा के महत्व के विषय में व्यापक रूप से समझाया, तो शिक्षा के प्रति जागरूकता का स्तर 175 (87.50प्रतिशत) हो गया है।

२. उत्तरदाताओं में प्राथमिक शिक्षा विषय की जानकारी सम्बन्धी विवरण:

प्रथम चरण में शोधर्थी ने पाया था, कि उत्तरदाताओं में प्राथमिक शिक्षा के विषय में 34.50 प्रतिशत जानकारी थी। क्रियात्मक कार्य के बाद उत्तरदाताओं में जानकारी का स्तर 112 (56:) हो गया। अर्थात 21.50 प्रतिशत जानकारी की बढ़ोत्तरी पायी गई।

३. उत्तरदाताओं में शिक्षा से सम्बन्धित योजनाओं का जागरूकता सम्बन्धी विवरण

प्रारम्भिक चरण में पाया गया, कि उत्तरदाताओं में शिक्षा से सम्बन्धित योजनाओं की जानकारी 13 (6. 50 प्रतिशत) थी, जबकि 187 (90.50 प्रतिशत) उत्तरदाताओं को शिक्षा से सम्बन्धित योजनाओं की जानकारी नहीं थी।

जब शोधर्थी ने कार्ययोजना बनाकर उत्तरदाताओं को योजनाओं के विषय में जानकारी दी, तो 65 (32. 50 प्रतिशत) उत्तरदाताओं में शिक्षा से सम्बन्धित योजनाओं की जानकारी पायी गई।

४. उत्तरदाताओं में साक्षरता अभियान जागरूकता सम्बन्धी विवरण:

प्रथम चरण में उत्तरदाताओं से साक्षरता अभियान के विषय में जानकारी ली गई, जिसमें पाया गया, कि 55 (27.50 प्रतिशत) उत्तरदाताओं को साक्षरता अभियान की जानकारी थी, व 72.50 प्रतिशत को जानकारी नहीं थी।

जब अनुसंधानकर्ता ने उत्तरदाताओं को साक्षरता अभियान के विषय में जानकारी दी तो पाया, कि 115 (57.50 प्रतिशत) उत्तरदाताओं में साक्षरता अभियान के प्रति जानकारी पायी गई, जो कि पूर्व प्राप्त आंकड़ों से 30 प्रतिशत ज्यादा थी।

५. उत्तरदाताओं में प्रौढ़ शिक्षा जागरूकता सम्बन्धी विवरण

प्रथम चरण में अनुसंधानकर्ता ने उत्तरदाताओं से प्रौढ़ शिक्षा के विषय में जानकारी की, जिसमें पाया कि मात्र 79 (39.50 प्रतिशत) उत्तरदाता ही प्रौढ़ शिक्षा के विषय में जानती थीं। क्रियात्मक कार्य के उपरान्त उत्तरदाताओं में जागरूकता का स्तर 115 (57.50 प्रतिशत) पाया गया।

सुझाव:

1. अशिक्षा सम्पूर्ण अज्ञानता की जननी है, एवं शोषण का आधा। इसलिए यदि समाज का, गाँव का, महिलाओं का उत्थान करना है, तो इन्हें शिक्षा के महत्व को समझना होगा।
2. गांवों में बड़े-बड़े पोस्टर एवं मुनादी (डुगडुगिया) के माध्यम से सरकारी योजनाओं के बारे में बताया जा सकता है, जिसका वे लाभ ले सकें।

सरकार को चाहिए, कि स्कूल में, कालेज में, महाविद्यालय में एक जनसम्पर्क विभाग की भी व्यवस्था करे, जो लोगों से सम्पर्क स्थापित कर शिक्षा के लाभ, शिक्षा सम्बन्धी योजनाओं, सरकार द्वारा चलाये जा रहे

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

शैलेन्द्र सिंह
असि० प्रोफेसर, समाज कार्य विभाग एवं सह समन्वयक महिला अध्ययन केन्द्र, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी, उ०प्र०

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

कार्यक्रमों की जानकारी ही न दे, बल्कि यह विभाग शिक्षा के विभिन्न रोजगारापरक कार्यक्रमों क्षेत्रों की जानकारी एवं मंत्रणा (Counselling) भी दें, ताकि वे वर्तमान के बदलते परिदृश्य के अनुसार अपने कैरियर का चुनाव कर सकें।

3. ग्रामीण निरक्षर महिलाओं का विकास तभी हो सकता है, जब उन्हें उनके विकास हेतु चलाई जा रही योजनाओं के लाभों से परिचित कराया जायेगा। जब उनकी सोच बदलेगी, इसके लिए उन्हे मंत्रणा के माध्यम से समझाया जायें, संप्रेषित किया जाये। महिलाओं के व्यक्तित्व का विकास करने हेतु उनका समाजीकरण किया जाये।

4. स्त्रियों को पुरुषों के समान शिक्षा के समान अवसर प्रदान किये जाएँ, के लिए समान पाठ्यक्रम हों। महिलाओं से कम शुल्क लेना चाहिए। विद्यालय एवं अन्य शैक्षिक संस्थाओं में प्रवेश में महिलाओं की संख्या बढ़ा देनी चाहिए।

5. शैक्षिक एवं प्रशिक्षण संस्थानों में महिलाओं के प्रति सांस्कृतिक एवं आर्थिक पूर्वाग्रहों के प्रभाव को कम करने के लिए अब अतिरिक्त प्रयास करने की आवश्यकता है। यह महिलाओं की सृजनात्मक क्षमता विकसित करने के लिए भी आवश्यक है। हमें प्रत्येक स्तर में महिलाओं की भर्ती प्रशिक्षण तथा विकास कार्यक्रमों के प्रसार के लिए विशेष प्रयास करना चाहिए। इसके साथ-साथ व्यावसायिक क्षेत्र में भी महिलाओं के प्रवेश को प्रोत्साहित करना चाहिए।

6. देश के सभी ग्रामीण, दूरस्थ, पिछड़े और अनु0जाति/जनजातीय क्षेत्रों में कम से कम प्राथमिक स्तर तक के विद्यालय सभी छाटे से छोटे गांवों में खोलना सुनिश्चित किया जाये, ताकि विशेष रूप से बालिकाओं को प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने हेतु गाँवों से बाहर न जाना पड़े। यद्यपि सरकार द्वारा शिक्षा गारंटी स्कीम के अंतर्गत देश के सभी स्कूल विहीन गाँवों में जहाँ मैदानी क्षेत्रों में कम से कम 20 बच्चे उपलब्ध हों, ग्राम पंचायतों के माध्यम से ऐसे प्रत्येक गांव में अस्थाई विद्यालय खोलने की घोषणा की गयी है, लेकिन इस योजना पर भली-भाँति और शीघ्र अमल किये जाने की आवश्यकता है, ताकि उद्देश्य की पूर्ति संभव हो सके।

7. प्रौढ़ महिलाओं और पुरुषों में शिक्षा के प्रति जागरूकता लाने के लिए प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का पुनः महत्व दिया जाना आवश्यक है। इस कार्यक्रम को अधिक मात्र में इस्तेमाल किया जाना चाहिए। सामाजिक कुरीतियों और अंधविश्वासों से उन्हें निजात दिलाने में शिक्षा की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। अतः इसके लिए जन जागरण और जन जागृति के महत्वपूर्ण अभियान विशष प्रकार के टी0वी0 और रेडियों कार्यक्रमों को तैयार कर उन्हें जनता के बीच ले जाने से किये गये प्रयास काफी सफल हो सकेंगे।

हम महिलाओं की शिक्षा और प्रशिक्षण को प्रोत्साहित करने वाली सिफारिशों को निम्नलिखित प्रस्तुत सकते हैं।

1. प्रारंभिक शिक्षा के सर्वसुलभीकरण को सुनिश्चित करने और विद्यालय बीच में ही छोड़ने और गतिरोध को कम करने के लिए अनिवार्य कदम उठाए जाएं।

2. सभी शैक्षिक स्तरों पर महिलाओं को समान अवसर प्रदान किये जाने चाहिए।

3. इसके साथ ही व्यावसायिक शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा तथा कौशल-विकास के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था की जानी चाहिए।

4. पाठ्यक्रम लिंग भेद विहीन होना चाहिए।

5. विद्यालयों का समय स्थानीय स्थितियों के अनुसार होना चाहिए।

6. महिलाओं के सामने आने वाली कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए, मुक्त शिक्षण पद्धति व्यवस्था, अंशकालिक शैक्षिक कार्यक्रम तथा विद्यालयों एवं कालेजों के समय का कृषि चक्र के साथ तालमेल, नामांकन बढ़ाने तथा शिक्षा चालू रखने में सहयोग देगा।

6. प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों के माध्यम से महिलाओं के मुद्दे और उनसे संबंधित विषय, नई प्रौद्योगिकी की जानकारी और प्रशिक्षण प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों का एक अंग है।

SHODH SANCHAYAN

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

शैलेन्द्र सिंह
असि० प्रोफेसर, समाज कार्य विभाग एवं सह समन्वयक महिला अध्ययन केन्द्र, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी, उ०प्र०

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

7. महिलाओं की शैक्षिक प्रक्रिया में भागीदारी के लिए और अधिक शैक्षिक संस्थायें खोलने के बजाय उनकी स्थिति में सुधार और क्षमता में वृद्धि करने के लिए जोर दिया जाना चाहिए।

आशा है कि उपरोक्त सुझावों को अमल में लाने से देश में महिलाओं और बालिकाओं की शिक्षा की स्थिति में थोड़े ही समय अच्छा प्रभाव दृष्टिगोचर होने लगेगा। आजादी के बाद के पिछले 54 वर्षो के इस क्षेत्र के अनुभव यद्यपि बहुत संतोषजनक नहीं रहे है। इन वर्षो में शिक्षा के विकास, प्रचार और प्रसार पर अरबों-खरबों की व्यय की गयी अपार धनराशि, शिक्षकों और नेटवर्क, समय-समय पर सरकार द्वारा तय किये गये लक्ष्यों की लंबी-चौड़ी घोषणाएँ और संचालित की गयी योजनाओं का यद्यपि कुछ असर तो दिखाई दिया है, लेकिन अभी तक हम असली मकसद को पूरा करने में सफल नहीं हो पायें हैं। इस आधी-अधूरी सफलता को पूरी सफलता में परिवर्तित करने हेतु अब इस दिशा में हमें पूरी सामाजिक, राजनैतिक और प्रशासकीय प्रतिबद्धता के साथ निरंतर और अथक प्रयास करने होंगे, तभी हम महिला सशक्तीकरण के अपने नारे को और स्वप्न को मूर्त रूप प्रदान करने में सफल हो पायेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः-

1. अग्रवाल ब., एशिया और प्रशान्त में महिलाओं का अध्ययन : वर्तमान स्थिति एवं आवश्यक प्राथमिकताओं की समीक्षा
2. अग्रवाल, जे0सी0, भारत में प्रौढ़ शिक्षा, विद्या विहार, नई दिल्ली।
3. आहूजा, राम, सामाजिक, अनुसंधान (2007), रावत पब्लिकेशनस जयपुरव नई दिल्ली, पृ0सं0-127
4. ओझा, एस0एन0, भारत की सामाजिक समस्याएँ, क्रानिकल पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
5. व्होरा आशारानी, स्त्री सरोकार, दिल्ली, आर्य प्रकाशन मण्डल, दिल्ली।
6. महिलाओं के लिए रोजगार कार्य दल रिपोर्ट- 1978 और कृषि एवं ग्रामीण विकास में महिलाओं की भूमिका तथा सहभागिता राष्ट्रीय समिति रिपोर्ट-1988
7. मुखर्जी रविन्द्रनाथ (1985), षष्ठम् संस्करण, भारतीय सामाजिक संस्थायें, पृ0सं0-
8. मुखर्जी आर0एन0, सी0जी0 कुलश्रेष्ठ, भारतीय ग्रामीण समाजशास्त्र (2003), प्रकाशन बुक डिपो, बरेली।
9. लवानिया, डॉ0 एम0एम0, भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र, रिसर्च पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
10. शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय (1971) "समानता की ओर" रिपोर्ट की 1975

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN